हमारे चिरस्मरणीय, पूज्य संत,
विद्यानुरागी, संस्थापक

ब्रह्मलीन संत
श्री महंथ रामाश्रय दास जी महाराज

ब्रह्मलीन संत
श्री महंथ रामाश्रय दास जी महाराज

श्री महंथ रामाश्रप दास जी की पवित्र जन्म भूमि ग्रा.+पो. पचपोखरी जनपद संत कबीर नगर -उ.प्र. है। आप का जन्म क्वार सुदी 9 संवत् 1976 वि. ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप साकृत गोत्र के ब्राह्मण थे। कौड़ीराम गोरखपुर के निकट मलांव गाँव के पाण्डेय थे। पिता का नाम स्व. सरयू पाण्डेय तथा माता का नाम स्व. हंसा देवी था। लगभग 10 वर्ष की उम्र में आप के पिता तथा 15 वर्ष की उम्र में माता जी का देहान्त हो गया। बड़े भाई स्व. वासुदेव पाण्डेय ने आप का पालन-पोषण किया। आप की रूचि प्रारम्भ से ही ईश्वर के प्रति रही, जिससे इन्होंने शादी नहीं किया और आजीवन ब्रह्मचारी रहने का व्रत धारण किया। प्रारम्भिक शिक्षा गांव पर ही हुई। उच्च शिक्षा प्राप्त करने की जिज्ञासा वश पलटू अखाड़ा अयोध्या गये। जहाँ पर भुड़कुड़ा-पीठ के विषय में अवगत कराया गया तथा उच्च शिक्षा हेतु वाराणसी जाने की सलाह पलटू अखाड़ा के महंथ जी द्वारा दिया गया।

वाराणसी जाने के समय ही आप संवत् 1993 में भुड़कुड़ा मठ आये। उस समय भुड़कुड़ा की गद्दी पर महंथ श्री राम वरन दास जी विराजमान थे। आप का परिचय पाकर बहुत ही आदर व सत्कार दिया तथा विद्याध्ययन हेतु अपनी ही पाठशाला में भेज दिया जिसमें लगभग 11 वर्षों तक आपने संस्कृत भाषा तथा ज्योतिष् शास्त्र का अध्ययन किया तथा उन्हीं से दीक्षा ली। संवत् 2004 में आप गुरु के आदेश पर दुबिहा नेवादा जिला-गाजीपुर के मठ पर लगभग 16 वर्षों तक महंथ के रूप में रहे।

संत राम वरन दास जी एक योग्य शिष्य की तलाश में थे जो सिद्ध पीठ भुड़कुड़ा मठ का दायित्व निर्वहन महंथ के रूप में कर सके। आप द्वारा दुविहा नेवादा में रहकर जिस प्रकार की व्यवस्था बनाई गयी थी उससे महंथ रामवरन दास जी बहुत प्रसन्न हुए तथा संवत् 2020 को अपना उत्तराधिकारी बनाते हुए वैधानिक तरीके से मठ से सम्बन्धित समस्त चल-अचल संपत्तियों को महंथ रामाश्रय दास जी के नाम से रजिस्ट्री कर दिया। संवत् 2021 में अपने रहते ही विजयदशमी के अवसर पर आप को गद्दी पर बैठा दिया।

संवत् 2026 वि. में आप के परम पूज्य महंथ रामवरन दास जी का देहान्त हो गया। आप पूर्ण रूप से मठ की व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करते हुए उच्च शिक्षा हेतु एक महाविद्यालय की स्थापना की, जो महंथ रामाश्रय दास पी.जी. कॉलेज भुड़कुड़ा, गाजीपुर के नाम से जाना जाता है।

आप अपने मठ तथा मानव समाज की चतुर्दिक उन्नति के प्रयास में सदैव संलग्न रहा करते थे। संत वाणी तथा रामचरित मानस के आप मर्मज्ञ थे। कुशल शास्त्रीय संगीत गायन, प्रवचन, हारमोनियम वादन, ध्यान धारणा, समाधि दर्शन आपकी नित्य दिनचर्या में सम्मिलित था। रामचरित मानस के विद्वानों के सारगर्भित लेखों से सम्पन्न ''मानस माधुरी पत्रिका'' का प्रकाशन आपने करवाया था।

जनवरी 2008 में आप को पेट में समस्या हुई। इलाज करवाया गया किंतु बहुत राहत नहीं मिला। आप सभी श्रद्धालुओं से कहना शुरू कर दिये कि अब चलने का समय आ गया है तथा बार-बार कहते थे कि 'पेट में मेहमान आ गये है अब शरीर लेकर ही जायेंगे' तथा ''कब मरिहौं कब भेटिहौं पूरण परमानन्द'' ऐसा बार-बार कहते थे। जीवन के अंतिम समय में आप के पारिवारिक सदस्य उमा शंकर पाण्डेय, वर्तमान पीठाधीश्वर व पाली के सुधीर राय जी सदैव आप की सेवा में लगे रहते थे। इस प्रकार 14 मई, सन् 2008 को सुबह 4 बजे पाली गाँव, गोरखपुर में आप का देहांत हो गया।

उमा शंकर पाण्डेय